Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 1-5

अवधी कविता का जनवादी परिदृश्य

डॉ संगीता देवी,
भरथुआ दोस्तपुर, जिला–सुलतानपुर उ.प्र. भारत।

स्वाधीनता के पश्चात् अवधी में जहां पुरातन विचारधाराओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, वहीं अवधी कविता में जनवादी विचारों की प्रचुरता भी देखी जा सकती है। स्वातन्त्रयोत्तर अवधी कविता के विषय किसान, मजदूर, दलित, पीड़ित–शोषित मजदूर, श्रमिक अथवा निरीह, बेसहारा लोग हैं, जो अभावों के मध्य लम्बी–लम्बी सांसें खींच–खींचकर जीवन–यापन को मजबूर है। आज के सभ्य समाज की महिलाएं रोज–रोज प्रताड़ना की शिकार हो रही हैं। आज के पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों को अमानवीयता की नजरों से देखा जा रहा है। एक स्त्री जो कभी देवी के रूप में पूज्यनीय थी आज उसी देवी का बलात्कार हो रहा है। उसका हक छीना जा रहा है। उसे प्रताड़ित किया जा रहा है। ऐसे समय में अवधी कविता जन–जन में मानवीयता का जयघोष करने में जुटी हुई है।

जनवादी अवधी साहित्य में जिस समाज का चित्रांकन किया गया है, वह गरीबी, फटेहाली से जकड़े सूदखोरों के मकड़जाल में फंसे–फंसे, भूत–प्रेतों की चिरौरी करते, सीरदारों की लत्ती–दुलत्ती खाते किसी तरह से जीवन निर्वाह करने को मजबूर दिखाई पड़ता है। जनवादी अवधी कविता लोकहित के लिए बहस करती है। उसमें समाज की विसंगतियों और विडम्बनाओं के प्रति तीखी चोट है। वह सड़े–गले रीति–रिवाजों, रूढ़ परम्पराओं पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। कविता समाज की धरोहर है। समाज की विरासत है। जनवादी अवधी काव्य में देश–काल, समाज की सच्ची झांकी प्रस्तुत हुई है। जनवादी अवधी कविता पुरजोर जनवाद का वर्णन करती है। यह सम्पूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है, जैसे पूंजीपति वर्ग वर्णित होता है परन्तु प्रतिरोधी चेतना के रूप में। मजदूर वर्ण्य विषय है, गरीबी, अभावों के कारण, शोषण के कारण, नारी आदर्श है तो आदर्श के कारण, यदि वह बलात्कार का शिकार है तो उसके कारण उसका वर्णन किया जाता है। इस तरह सम्पूर्ण समाज का खुला यथार्थ वर्णन जनवादी कविताओं में मिलता है। इसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन कराना नहीं वरन् भूखे, नंगे समाज को प्रगति के पथ पर लाना है। ''अवधि कविता का तेवर बड़ा ही ओज और तेजपूर्ण है। उसकी तासीर क्लैसिक है। उसकी स्वच्छन्दता–स्वतंत्रता में भी क्रमशः संस्कार और मर्यादा है। उसके रंगों में सात्विक उजास और जीवन्तता है। राग की लालिमा नही वरन् अनुराग की अरूणाभा है।''

अवधि कविताओं में भारतवासियों की दुर्दशा–व्यथा–कथा अंग्रेजी राज का अन्याय, अत्याचार, शोषण, सामाजिक जड़ रूढ़ियों के प्रति विद्रोह तथा जीवन के विविध क्षेत्रों में सुधार की भावना के साथ–साथ वर्तमान दुर्व्यवस्था के प्रति क्षुब्ध, आक्रोश, मात्र भूमि का महत्व, अतीत का गौरवगान, गांव–गांव, जन–जन की भावनायें जाग्रत करके महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति, मानवता के पक्ष में की है। विद्रोही प्रवृत्ति के सच्चे जनकवि बंशीधर शुक्ल जनवादी साहित्व के प्रमुख सर्जक रहे हैं। शुक्ल जी की कविता में जनवादी विचारों की अनुगूँज दिखाई पड़ती है। उनकी कविता सूदखोरों का विरोध करती है, समतापूर्ण समाज की स्थापना का राग अलापती है। अन्याय, भ्रष्टाचार आदि का विरोध करती है–

''अब तौ बाक, साफ करू भेरूआ, सूधा कर दे बांस,
मुफ्तखोर बेकार न पनपै, रहै जुल्म न त्रास।
सबरे पात बराबरि करूइ, कल्पवृक्ष विरवा कै,
जागु रे सैनिक स्वतंत्रता के।

वंशीधर शुक्ल की तमाम कविताओं में जनवादी विचारधारा का समावेश दिखलायी पड़ता है। स्वातन्त्रयोतर अवधी कविता में किसानों की दीन दशा का वर्णन मिलता है। अवधी कविता के अधिकांश कवि ग्रामीणांचल के हैं। अतः अवधी कवितायें कृषक जीवन का दर्पण हैं। आज राजनीतिक भ्रष्टाचार, लड़ाई, झगड़ा, मुकदमेंबाजी, सूदखोरी, घूसखोरी, लूट, डाका गॅवई परिवेश में बसे हैं। इनसे छुटकारा पाना बड़ा मुश्किल है। कृषक धरती में अपने खून–पसीने को एक कर देता है फिर भी परिवार का भरण–पोषण नहीं हो पाता है।

वहीं मिल मालिक, ठेकेदार रोजगारी, एजेन्ट, डाक्टर, वकील, पुलिस सब मिलकर उसे चूसते रहते हैं। ये पेशे वाले लोग हमेशा सम्पन्न और सुखी होते हैं पर ग्रामीण तो ग्रामीण हैं:–

''जमींदार कुतवा अस नोचैं, देह की बोटी–बोटी।
नउकर, प्यादा और कारिन्दा ताके रहँइ लँगोटी।
पटवारी खुरचाल चलावैं, बेदखली, इस्तीफा,
रोजइ कुड़की औ जुर्माना, छिन–छिन नवा लतीफा।
मोटे–मोटे कपड़ा बरतन, मोटा–झोटा खाना,
घर ते ख्यात, ख्यात ते बग्गर कहूँ न आना–जाना।
ठग्गा नंगा इज्जत पावैं, किमियागर पुजवावई,
फेरी करई विसाती पटवा मेहरिन का पलझावइं।
सड़ा–गला मनमाने दामन, सउदउ गरे लगावइ,
मनिहारी लै चुरिया कंगना, दुई के चारि बनावइ।
बीच हाटि मा डाड़ी मारै, उइ घटतौला बनिया,
जहां जाइ तँह ठगिके आवंइ, ई किसान कइ दुनिया।''

समाज में बाल विवाह, बहु विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह दहेज प्रथा, वेश्यागमन, अस्पृश्यता, भ्रष्टाचार जातीय संकीर्णता, पाखण्ड, धार्मिक अन्ध विश्वास, अनाचार, जमींदारी की कुप्रथा आज भी वैसी ही है जैसे कि पहले थी। अकल्याणकारी शिक्षा नीति, विलासिता, फैसनपरस्ती आदि अनेक कारण मनुष्य को मिटाकर रख दे रहे हैं। समाज में परिव्याप्त इन सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर करने तथा जन–जन में मनुष्यता का प्राण फूंकने में जनवादी अवधी कवितायें मुखरित होती दिखाई पड़ती हैं–अनमेल विवाह का एक उदाहरण दर्शनीय है–

''म्वाछन का जर ते छोलि–छालि, देही के र्वाँवा झारि दीन।
भँउहन की ब्वारैं साफ भई, मूड़े मा पालिस कारि कीन।।

रमई काका का हास्य–व्यंग्य गम्भीर दिखायी पड़ता है। समाज में कभी–कभी सामाजिक कुरीतियों व बुराईयों को देखकर शिष्ट हास्य के भी दर्शन होते है। एक दृश्य परदा–प्रथा का अवलोकनीय है।

''कहा हम तब टाठी सरकाय, लोनु पहिती मा देव गिराय।
तिनुकु कुछ औरौ घूँघुट काढ़ि, लोनु उइ दिहेन खीर मा छाँड़ि।
न कक्कू अइसौ परदा चाही।''

आधुनिक अवधी कवियों का जनवादी विचार प्रगतिशील रहा है। उनकी विचारधारा मानवीय चेतना की भावभूमि पर आधारित है। जनवादी कवियों का चिन्तन दुःखी–शोषित, पीड़ित, जनता की पक्षधर रही है। अवधी कविता दया, प्रेम, करूणा, परोपकार, समानता आदि मानवीय मूल्यों की प्रस्तोता रही है। इन कवियों का मानना है कि जब तक दुःख–दर्द और अभाव की वायु चलती रहेगी तब तक देश में प्रेम सद्भाव तथा समता की धारा प्रवाहित नहीं हो सकती है–

''तन–मन का पूर–पूर पुतरा, बस वहै आय सुन्दर मनई।
बाहर–भीतर–ऊपर–खाले मा, वहै आय सुन्दर मनई।
आँखिन मा करूना छलकि रहयि, चेहरा पै दाया झलकि रहयि।
मर्दुमी बाँह पै फरकि रहयि, बस वहै आय सुन्दर मनई।
जो दुखियन देखे खरू खाय, सुख वालेन ते खीसइ काढ़यि।''

स्वातन्त्रयोत्तर अवधी कवियों ने जन–जन की पीड़ा को अपनी रचनाओं में बड़ी ही सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। अवधी कविताओं में खासकर जनवादी भावनाओं से युक्त कविताओं में मानवीय संवेदना के स्वर मुखरित हुये हैं। अवधी कवियों ने मानवीय मूल्यों और आदर्शों को प्रतिस्थापित करने का दृढ़ संकल्प लिया है। राजनीतिक समस्याओं से सम्बन्धित व्यंग्य भी उनके बहुत तीखे हैं जो हृदय पर सीधे–सीधे चोट करते हैं–

''बतकट चाकर, पौकट, जूत, चंचल बिटिया बंजर पूत।
नटखटि तिरिया लागै भूत, लड़ै मुकदमा बिना सबूत।
कहैं दिहाती रखियो याद, इनकी घोंप गयी मरजाद।''

स्वातन्तयोत्तर अवधी कविता में शोषक और शोषित वर्ग का यथार्थ प्रतिविम्ब उकेरा गया है। जनवादी अवधी कवियों ने सामन्तवाद, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का बड़े तीखे स्वर में विरोध किया है। भारतीय कृषक जो दिन भर कड़ी मेहनत करने के बाद दो जून की रोटी की व्यवस्था करता है। वह भी सुख से या कहे कि अमन–चैन की नींद नहीं सो पाता है। उच्च वर्ग यानी पूँजीवादी वर्ग उसका जमकर शोषण करता है। एक उदाहरण दर्शनीय है:–

''ईंट किसानन के हांड़न का, लगा खून का गारा।
पाथर अस जियरा किसान का चमक आँख का तारा।
लगी देश भक्तन की चरबी, चिकनाई जुल्मन की।
घंटा ठनकइ अन्याइन का, कथा होय पापन की।

जहाँ बसइं ऊ जम का भ्इया, खाय खून की रोटी।
वहइ बनी बूचड़खाना असि, यह राजा की कोठी।''

जनवादी विचारधारा की रचनायें सीधे–साधे गांव की जनता, किसान, मजदूर का गरीबी और त्रासदी को बयां करती नजर आती है। ऐसे दीन–हीन लाचार और बेसहारा की संवेदना का गीत जनवाद में मिलता है। शुक्ल जी जनवादी कवि के रूप में अवधी साहित्य में अपनी ज्योति विकीर्ण कर रहे हैं कबीर की तरह उन्होंने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अनाचार और शोषण की खुले शब्दों में निन्दा की है–

''सबै किस्तहा महाजनन की घर–घर बोलै तूती।
गाँसि घेरि कै करजा बाँटैं, फिरि फटकारैं जूती।
रोजही औ नौ दसी उगाही, पुरूनोट औ रूक्का,
दस्तक भेंट बेगारि उचापति, रोजइ थुक्कम थुक्का।
धन्ना दै मोहरे मा बैठे उल्टा डारैं खटिया,
लटे, लिहाड़े करैं तगादा, ताकैं बहिनी–बिटिया।''

समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण से पीड़ित बेबस लाचार के प्रति कवि की लेखनी बरबस ही चल पड़ी है–

''हिया सुधार सिखावइ आवंइ, दुनिया भर के लोफर।
हिंसा नसइ नस बधनि चूसइ सब सरकारी नोकर।
हिंसा सांप बीछी हई, नर–नारी परतन्त्र।
विपति हिंया कै जीवनि संगिनि जहरू उचारह मन्त्र।''

जहां आज के समाज में पुरूष अपने कदम को आगे बढ़ा रहा है, वहीं नारी भी पुरूष के कदम से कदम मिलाकर जीवन यापन कर रही है। पर आज के गांवों में रहने वाली स्त्रियों की क्या स्थिति है, एक दृश्य दर्शनीय है–

''गौरून का चारा पहुँचावाइ, लरिकन का फुसलावइ।
सगरे घर का काम चलावइ, पति का अदबु बजावइ।
टोला की दुइ–चारि जनी मिली, बाहर निकरै साथे।
चकिया पीसइ धानु कुटावइ, कण्डा उपरी पाथइ।
कपड़ा फींचइ बरतन मांजइ, घर की करै सफाई।
रोटी करै खवावइ सबका, अंजनु बनी लुगाई।
हंसइ न बोलइ कुछु न जानइ, पूत खेलावइ कनिया।
काम करइ का रचिस विधाता, यह किसान की दुनिया।''

अवधी के प्रख्यात कवियों में जनवादी कवि रमईकाका की कृतियां समाज की विषमताओं पर जबरदस्त व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं– शोषण और अन्याय करने वाले धनिक यानी पूंजीपति वर्ग कवि की सशक्त लेखनी से बच नहीं पाये हैं, जिसका एक उदाहरण अवलोकनीय है–

''खेतिहर मजूर के प्याट काटि, जइसे कोउ बइठे बनि कुबेर।
लोहू के दीपक बारि करै, अपने घर मा जगमग उजेर।
वसि वही तना ते चूसि–चूसि, है किहे देत हमका जर–जर।
यू हमरी छाती कै पीपर।''

स्वातन्त्रयोत्तर जनवादी अवधी कवियों में गुरूप्रसाद सिंह 'मृगेश जी का अवधी साहित्य जगत में अप्रतिम स्थान है। जमींदारी प्रथा में किसान की व्यथा–कथा, प्राकृतिक आपदा से परेशान कृषक तबका, उसकी दवा–दारू की समस्या, शादी–विवाह आदि की चिन्ता, से ग्रसित समाज का बेबाक चित्रांकन अवधी कविता में दृष्टिगोचर होता है। मानवतावाद विश्वमैत्री, गांव–देश सबका यथार्थ चित्रण किया गया है। कुरीतियों, झूठा, अनाचारों इत्यादि से कवि का हृदय मर्माहत हुआ है। कुछ अवधी पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

''सेंतिन मा पकरि बेगारि करवावैं सब,
देंइ न छदाम चहै जेती करी चाकरी।
सहना सिपाही रोजु ठाढ़ि गरियावा करैं,
मन मा मसूसा मारि सबिहौं सहा करी।
नंगे और उघारि जाड़े–पाले मा दुवारे परे,
भूखन के मारे भइया नखत गना करी।
अत्न्यो पर परत पिटाव रोजु ड्योढ़ी पर,
हाँ करी कि ना करी, बतावा फिरि का करी।।

स्वातन्त्रयोत्तर जनवादी अवधी कविता में सूदखोर महाजनों की घृणित वृत्ति का सुन्दर चित्र उकेरा गया है। सूदखोर महाजन मजबूर, असहाय किसान, गरीब से जमकर सूद की रकम वसूल करता है। वह मानवता को ताख पर रखकर सिर्फ अपने सूद से मतलब रखता है। जनवादी कवि 'व्यथित जी' के काव्य में इसका प्रणयन किया गया है।

''सूदखोर मजबूर कै, लिहेसि चाम निकिसाइ।
दस का लै सो सूद मा, मूरख खड़ा हिंहियाइ।।
सूद बढ़ा सुरसा भवा, लेनदार, रिरियाय।
हाथ जोरि पायन परै, देनदार, तनियाय।।
रेफ न लागे बाति मा, माला कंठी साथ।
अँगूठा लगवाइ कै, काटै दुनउ हाथ।।
पाई–पाई जोरि कै, जोरत रहे बियाज।
गरदन पर छूरी धरैं, राखैं नाय लिहाज।।''

अवधी की जनवादी कविताओं में ग्राम जीवन का यथार्थ वर्णन मिलता है जिसमें गरीब मजलूमों की दर्द भरी

चीत्कार सुनाई पड़ती है। सामान्य जीवन जीने के लिये भी उसे दर–दर की ठोंकरे खनी पड़ती है। पूंजीपति और जेठ–साहूकारों के चंगुल में फंसी भोली–भाली जनता मिलावटी खाद्य पदार्थों का सेवन करने पर विवश दिखाई पड़ती है। आज आटे में धूल–मिट्टी और दूध में पानी की मिलावट आम बात हो गयी है। तभी तो कवि का आकंठ फूट पड़ा–

"पानी बिकै दूध के बदले, घिउ दूलम भा खाँटी।
आटा के बदले बजारि मा मिलै धूरि और माटी।

X X X

बनिया बइठा बीच बजारै, निधरक मारैं डाड़ी।
यक सीधा का लड़ै पुरोहित, ठोंकि–ठोंकि कै ताड़ी।"

समाज में परिव्याप्त अनैतिकता, सफेदपोस द्वारा अन्याय और अधर्म को पोषित करने वाली विचारधारा का उल्लेख जनवादी कवियों ने किया है। आधुनिक सन्दर्भ में समाज? सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों एवं सफेदपोश नेताओं द्वारा शोषित, प्रताड़ित किया जा रहा है। समाज में सर्वत्र चोरी, घूसखोरी, झूठा आश्वासन एवं अन्याय का बोलबाला हैं। आचार्य विश्वनाथ पाठक ने अपने महाकाव्य सर्वमंगला में इसका यथार्थ उल्लेख किया है–

"अधिकारी भूखी जनता का मीठि सुनावै लोरी,
राजपुरूष अपने पहरा पै करै राति मा चोरी।
डाकू–चोर–लबार–लंठ कै, रहै राति–दिन चानी,
सीलवन्त–गुणवन्त नरन कै मानौ मरिगै नानी।
हिस्सा देय सिपाहिन का जे करै रोजु मुँहताका,
तेहपै अंगुरी केउ न उठावै, निधरक मारै डाका।
भाय–भतीजा सामन्तन कै ऊंच–नीच पद पावैं,
नीक–नीक नर ठिकरा फोरैं, माछी बइठि हड़ावैं।
खाई मूस पकरि जिनगी भै, लिहीं दूध का घाला,
बे बिलारि भगतिनि बनि बइठीं बनकैं झूलै माला।"

शासन–प्रशासन को चुस्त–दुरूस्त करने वाले अधिकारी कर्मचारी नेतागण अपने अपने कर्तव्य–बोध से विमुख होते नजर आते हैं। परिणामतः गरीब, दलित समुदाय जो धर्म, न्याय और सुरक्षा की आशा करता है, उसे निराशा ही हाथ लगती है। आज सरेआम कत्ल अधर्म अनैतिकता का वर्चस्व कायम होता जा रहा है। कुछ यही भाव व्यंजित करती विश्वनाथ पाठक की काव्य पंक्तियां अवलोकनीय हैं–

"भेड़िन के लेहड़न पै ह्वेइगे विगवन कै ठकुराई।
गइया के खूंटा पै बइठा पहरेदार कसाई।
घर मा नाय गिरस्त सुरक्षित औ न राह मा राही।
निरनय करत कचहरी काँपै पकरत चोर सिपाही।
धूर्त भये जनता के अगुवा सपन देखावैं लोना।
न्यायालय में पहुंचै लागै न्याय बराबर सोना।।"

जनवादी भावना से जुड़े कवि अवस्थी जी ने बाबू–महिमा नामक शीर्षक कविता में सरकारी दफ्तरो में गांधी जी के चित्र के माध्यम से अपने को गाँधीवादी आदर्शों का दिखावा करने वाले कर्मचारियों के घृणित कृत्य को निम्न शब्दों में व्यक्त किया है–

"गाँधी जी की तसवीर टाँगि अब बाबू यह समुझाइ रहे।
गाँठी ते ख्वालउ पाँचु नोट नँइ डंडा लइकै आइ रहे।
रिस्वत की है अब कौनि बात अब तौ सब हकु नजराना है।
जो हकु माँगइ सो मर्दु आइ, हकु छ्वाडइ वहै जनाना है।।

प्रखर जनवादी कवि निर्झर प्रतापगढ़ी ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अनैतिकता एवं बेरोजगारी का सुन्दर चित्रांकन अपनी लेखनी से किया है। समाज के ऐसे वर्ग पर उनका व्यंगात्मक प्रहार दर्शनीय है–

"आवा गोविन्दे भैस चराई।
बिना कमाही भये उठल्लू, अपनिव मेहरि लगै पराई।
हमहूँ जौ अफसर होइ जाइत, बइठि मजे मा नोट कमाइत।
लरिका–परिका मौज उड़उते, बीबी के नक्सा होतै हाई।
प्राइमरी मा मुंशी होइत, जानौ गंगा मा जौ बोइत।
सेत–मेत मा मिलतै पइसा, घरही बइठित घूम–घुमाई।
कोर्ट कचहरी मा होइ जाइत, मनचाही खुब लूट मचाइत।
बड़े–बड़े सब घेरे रहतेन, चला बाबू जी चाय पियाई।
अफसर भा जब गोबर गनेस, तौ लेकर लाठी ओकर भैंस।
सीधे के मुह चाटे कुत्ता, केकरे–केकरे तेल लगाई।
मन बोलत बा अगले हफ्ता, फूलन जैसे गैंग बनाई।
नेता अफसर सब पिछुवइहैं, सीधे पै केउ ध्यान न देइहैं।

X X X

कलर्की कै हम दीन परिच्छा, इन्टरव्यू कै रही प्रतिच्छा।
पता चला की काम करत बा, उहाँ बड़े बाबू कै भाई।।"

स्वातन्त्रयोत्तर जनवादी अवधी कविता सामाजिक विसंगतियों को दूर करने का प्रयास करती नजर आती है। समाज में अस्पृश्यता दहेज प्रथा, अनैतिकता, वेश्यावृत्ति जातीय संकीर्णता आदि का बोलबाला है। समाज की इन बुराइयों को दूर करने में अवधी साहित्य

महती भूमिका का निर्वहन करता है। समाज अस्पृश्यता, दहेज प्रथा और अनैतिकता की दावाग्नि में पूरी तरह झुलसता नजर आता है। समाज में छोटे–बड़े ऊँच–नीच, वर्ग भेद आदि का चित्रांकन कर इनको दूर करने का सफल प्रयास अवधी कवियों ने किया है। सृष्टि में एक धरती, एक आकाश, एक ही वायु और एक ही पानी दृष्टिगत होता है साथ ही एक ही परम पिता की सन्तति विद्यमान है। ऐसे में छोटे–बड़े का विचार करना अनुचित हैः–

''धरती एक बा, एक बा अम्बर एक पवन औ पानी।
जननी एक वही से उपजी, छोट बड़े सब प्रानी।।''

जनवादी कवि सत्यधर शुक्ल समाज के ऐसे चतुर चितेरे हैं जिनकी कवि दृष्टि से समाज का, सृष्टि का कोई भी कोना अछूता नही है। समाज की उलझी समस्या को सुलझाने व समाज को दिशाबोध प्रदान करने का हौंसला उनकी कविताओं में देखा जा सकता है–

''ब्राह्मण न क्षत्रिय न वैश्य शूद्र कोउ नाहिं,
मानव जाति एक–एक ध्यान होइ गये रहैं।

X X X

एक मनु बसु एक कुल एक जाति एक गोल,
सब एक मन जेती पुंज के प्रभा पसार।
अस एक रूप हुआ बाभन न क्षत्रिय न,
कोउ नहिं वैश्य और न तो कौनो कलाकार,
हिलि–मिलि काम करै मिलि–जुलि बाँटे अन्नु।''

समाज में 'अभिशाप' के नाम से व्याप्त दहेज प्रथा सम्पूर्ण मानवता को गर्दिश में डाल दिया है। आज समाज में अपनी इसी शान का प्रदर्शन करने वाले दिल खोलकर दहेज की मांग करते हैं। प्रायः यह आम धारणा बन गई है कि समाज में जिसे जितना ज्यादा दहेज मिलता है वह उतना ही बड़ा व्यक्ति माना जाता है। जबकि यह धारणा बिल्कुल असत्य है। दहेज प्रथा पर कुठाराघात करते हुए व्यथित जी ने लिखा है–

''दम्पति जीवन मूल मा, कहाँ दहेजी भूत।
गुन से गुन का तौलि ल्या, धन तौ महा अछूत।।
बेचैं बेटवा नीच जे, वनकर कइसन मान।
वनके घर जिनि जाइकै, भूलि किह्या जलपान।।
बिटिया बेचे पाप जस, तस बेटवा कै पाप।
समुझा नीच गलीच है, इन दोउन कै बाप।।
रामकृस्न के देस मा, घुसा दहेजी भूत।
मनई दानव होइ, बेचै विटिया पूत।।''

X X X

जस कइ चन्दा चाँदनी, तस नारी नर मेल।
बाती दीया मा भले, जरै नाय बिनु तेल।।''

सत्य अहिंसा, प्रेम, सौहार्द, विश्वबन्धुत्व, दयालुता, विनम्रता, सदासयता, धर्मप्रियता के कारण भारत विश्व में अनूठा रहा है। यह भूमि रामकृष्ण, गौतम, गाँधी, सीता, सावित्री आदि के महिमामण्डित व्यक्तित्व से सनी आज भी उनकी चारित्रिक विशेषताओं की सुगन्धि विकीर्ण कर रही है।

परिवर्तन के साथ ही आज नैतिक आचरण से पथभ्रष्ट मनुष्य धर्म, कर्म सब भूल चुका है। स्वार्थ के बन्धन में जकड़ा मनुष्य बेईमानी अधर्म और अनीति के सहारे सब कुछ अकेले हथियाना चाहता है–

''धर्म–कर्म सब डूबत बाटै, केउ ओहरी न ताकै।
जइसे आँखी चोन्ही लागइ, हाथ आड़ लइ झांकैं।
कई ठगी बेइमानी कइ अस फइला।
मनई–मनई का न चीन्हइ, धरे कान कहि धइला।''

आज सम्पूर्ण मानवता स्वारथपरता में लिप्त होकर मनुष्य की परिभाषा को ही कलंकित कर दिया है। आज सर्वत्र मनुष्य–मनुष्य के बीच द्वन्द मचा हुआ है। स्वातन्त्रयोत्तर अवधी कविता के कवि मृगेश जी ने लिखा है–

''अस तो न कौनों देश बचा, जिहिमा न द्रोह कै मंच रहा।
यूँ द्रोह न भाइन बीच मचा, भा देवासुर संग्राम रचा।
इनहू से सिर भारत ह्वैगा, गौरव गरूर गारत ह्वैगा।
अस द्रोह द्वैष मा रत ह्वैगा, घमासान महाभारत ह्वैगा।''

जातीय संकीर्णता, स्वार्थपरता आदि की भावभूमि से ऊपर उठकर समाज में समभाव एवं समरसता का भाव भरना चाहिये। सम्पूर्ण भारत में निवास करने वाला हर बच्चा–बच्चा भारतीय या फिर हिन्दुस्तानी है। समाज के मध्य सम्भाव की स्थापना हो सके इसका अवधी कवियों ने सराहनीय प्रयास किया है। जातीयता, स्वार्थपरता की गन्दी भावना से ऊपर उठकर विश्वमैत्री के स्वप्न को साकार करना ही अवधी कवियों का ध्येय रहा है–

''एक भुइ पै रही थइ हम सब एक पिई थइ पानी।
एक मिली जलवायु हमयि बा, हम है हिन्दुस्तानी।
के हिन्दू के अहयि इसाई, के मुस्लिम के पासी।
के राजा के रंक हो भइया के रानी के दासी।
लाल खून हमरौ परसी और इसाई कै।
एक ढंग कै रूपरंग हमरी तोहरी परछाई कै।

इस प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर जनवादी अवधी कविता शताब्दियों से पीड़ित, व्यथित, शोषिन, दीन–हीन, विपन्न एवं अन्यान्य अमानवीय कृत्यों से आहत मानव जीवन की

करूण कथा है। जनवादी कविता सामाजिकता की पोषक है। साथ ही सामन्तवादी व्यवस्था, पूँजीवादी, शोषण, नेताओं की निरंकुशता भ्रष्टाचार और अफसरशाही व्यवस्था को ताल ठोंक चुनौती देती है। ऐसे कोटि–कोटि किसानों, मजदूरों, गरीबों की त्रासदी नियति को बदल डालने के लिए अवधी के जनवादी कवि प्रतिबद्ध है।

अतः आने वाले समय में अवधी साहित्य से बहुत कुछ आशा और अपेक्षा है। यह पूर्ण विश्वास है कि जनवादी अवधी कवि समाज को विश्वबन्धुत्व, मैत्री और समभाव का पाठ पढ़ाकर नयी दिशा प्रदान करेगा।

सन्दर्भ

1. अवधी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, सं0 प्रो0 राजेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव, पृ0 190,
2. आधुनिक अवधी काव्य, सं0 डॉ0 सूर्यप्रकाश दीक्षित एंव डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 42,
3. राममड़ैया, वंशीधर शुक्ल, पृ0 10,
4. अवध अवधीःविविध आयाम, सं0 डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 384,
5. अवध अवधीःविविध आयाम, सं0 डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 385,
6. अवधी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, सं0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह, पृ0 203,
7. अवधी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, सं0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह, पृ0 170,
8. राजा की कोठी, बंशीधर शुक्ल, शीर्षक कविता। पृ0सं0 1
9. राजा की कोठी, बंशीधर शुक्ल, शीर्षक कविता। पृ0सं0 1
10. आधुनिक अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर, सं0 डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 64,
11. वही, पृ0 68,
12. छाती का पीपर, रमई काका शीर्षक कविता। पृ0सं0 2
13. आधुनिक अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर, सं0 डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 130,
14. अवध सतसई, डॉ0 जयसिंह व्यथित, पृ0 4
15. सर्वमंगला, आचार्य विश्वनाथ पाठक, स्वतंत्रता का मन्त्र, सर्ग–13,
16. सर्वमंगला, आचार्य विश्वनाथ पाठक, स्वतंत्रता का मन्त्र, सर्ग–13,
17. सर्वमंगला, आचार्य विश्वनाथ पाठक, स्वतंत्रता का मन्त्र, सर्ग–13,
18. अवध अवधीःविविध आयाम, सं0 डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी, पृ0 322,
19. आवा गोविन्दे भैंसि चराई शीर्षक रचना, निर्झर प्रतापगढ़ी,
20. सर्वमंगला, आचार्य विश्वनाथ पाठक, पृ0–139,
21. ध्रुव महाकाव्य, सत्यधर शुक्ल, पृ0 11,
22. अवध सतसई, डॉ0 जयसिंह 'व्यथित पृ0 61–61
23. गोसाई तुलसीदास, आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' पृ0 14,
24. पारिजात, गुरूप्रसाद सिंह मृगेश, पृ0 31–32,
25. अवध बानी, आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप पृ0 29,